INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY BOOK SERIES
https://ibseries.com/
भारतीय ज्ञान प्रणाली: परंपरा, विज्ञान और समकालीन प्रासंगिकता, संपादक: मोहन सिहाग, जॉयदेब पात्रा

IMBS, Vol. 02, No. 1, (2024)
Open Access. Online & Print
ISSN:

अध्याय 1
भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय

ओम प्रकाश कुड़ी
प्रधानाचार्य, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय,
गुढ़ा कुमावतां, जोबनेर

सारांश (Abstract)
भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) *विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है, जो हजारों वर्षों से विकसित होती आ रही है। यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन के विभिन्न आयामों—दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, कला, संस्कृति और आध्यात्मिकता—का समन्वित एवं समग्र रूप है। इस अध्याय में भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा, ऐतिहासिक विकास, प्रमुख स्रोतों जैसे वेद, उपनिषद और शास्त्रों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, आधुनिक शिक्षा, अनुसंधान और वैश्विक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। अध्याय में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख क्षेत्रों, उसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों, तथा वर्तमान समय में इसके उपयोग और चुनौतियों का भी विवेचन किया गया है। यह अध्याय विद्यार्थियों और शोधार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा की गहराई और व्यापकता को समझने में सहायक होगा।*

कुंजी शब्द (Keywords):*भारतीय ज्ञान प्रणाली, वेद, उपनिषद, दर्शन, आयुर्वेद, योग,* NEP 2020, *सतत विकास, पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत*

1.1 *परिचय* (Introduction)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) *विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और सतत विकसित होने वाली ज्ञान परंपराओं में से एक है। यह केवल सूचनाओं या तथ्यों का संग्रह नहीं है, बल्कि एक ऐसी व्यापक प्रणाली है जो मानव जीवन के हर पहलू—भौतिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक—को संतुलित और समन्वित रूप में विकसित करने का प्रयास करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि जीवन को समझना और उसे सार्थक बनाना है।*

प्राचीन भारत में ज्ञान को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। "विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्" जैसे सूत्र यह स्पष्ट करते हैं कि ज्ञान का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि नैतिकता, विनम्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी है। इस दृष्टि से भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणालियों से भिन्न है, क्योंकि यह केवल तकनीकी या व्यावसायिक कौशल पर नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल देती है।

Copyright © 2024 by International Multidisciplinary Book Series
All rights of reproduction in any form reserved.
ISBN (978-81-685212-7-8)

भारतीय ज्ञान प्रणाली की विशेषता यह है कि यह समग्रता (Holism) पर आधारित है। इसमें मानव को केवल एक जैविक प्राणी के रूप में नहीं, बल्कि एक चेतन, संवेदनशील और आध्यात्मिक अस्तित्व के रूप में देखा जाता है। इस प्रणाली में शरीर (Body), मन (Mind) और आत्मा (Soul) के बीच संतुलन स्थापित करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उदाहरण के लिए, योग और आयुर्वेद जैसे विषय न केवल शारीरिक स्वास्थ्य, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन को भी सुनिश्चित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण पहलू इसका प्रकृति के साथ सामंजस्य है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में प्रकृति को "माता" के रूप में देखा गया है और उसके संरक्षण पर बल दिया गया है। "पंचमहाभूत" (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का सिद्धांत यह दर्शाता है कि मानव जीवन और प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। वर्तमान समय में जब पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में ज्ञान का स्रोत केवल पुस्तकों या लिखित ग्रंथों तक सीमित नहीं है। यह प्रणाली अनुभव (Experience), साधना (Practice) और आत्मबोध (Self-realization) पर आधारित है। गुरु-शिष्य परंपरा इसके प्रमुख माध्यमों में से एक रही है, जिसमें ज्ञान का आदान-प्रदान केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और अनुभवात्मक रूप में होता था। इस परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाना था।

आधुनिक युग में, जहाँ तकनीकी प्रगति ने जीवन को सरल बनाया है, वहीं कई नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे मानसिक तनाव, सामाजिक असंतुलन और पर्यावरणीय समस्याएँ। इन समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, योग और ध्यान आज विश्वभर में मानसिक स्वास्थ्य सुधार के प्रभावी साधन के रूप में स्वीकार किए जा रहे हैं।

भारत सरकार द्वारा लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली को विशेष महत्व दिया गया है। इस नीति का उद्देश्य पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच समन्वय स्थापित करना है, ताकि विद्यार्थियों को एक संतुलित और समग्र शिक्षा प्रदान की जा सके। इसके अंतर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों में भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव वैश्विक स्तर पर भी देखा जा सकता है। योग, आयुर्वेद, ध्यान, भारतीय गणित और दर्शन जैसे विषयों को विश्वभर में अपनाया जा रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल ऐतिहासिक धरोहर है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी अत्यंत उपयोगी है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली एक जीवंत और गतिशील परंपरा है, जो समय के साथ विकसित होती रही है और आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। यह प्रणाली हमें न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि जीवन को संतुलित, नैतिक और सार्थक बनाने की दिशा भी दिखाती है। इस अध्याय के माध्यम से पाठकों को इस समृद्ध परंपरा की मूलभूत समझ प्रदान करने का प्रयास किया गया है, ताकि वे इसके महत्व और उपयोगिता को गहराई से समझ सकें।

1.2 भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा (Conceptual Framework)

भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल सिद्धांत "सर्वे भवन्तु सुखिनः" पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि सभी का कल्याण हो। यह ज्ञान प्रणाली समग्रता (Holistic Approach) पर आधारित है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा के संतुलन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

प्रमुख विशेषताएँ:

- समग्र दृष्टिकोण (Holistic View)
- प्रकृति के साथ संतुलन
- नैतिकता और मूल्य आधारित जीवन
- अनुभव और प्रयोग आधारित ज्ञान

भारतीय ज्ञान प्रणाली में ज्ञान को केवल सूचना नहीं माना जाता, बल्कि उसे अनुभव, साधना और आत्मबोध के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

1.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

भारतीय ज्ञान प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी रहा है, जिसकी जड़ें हजारों वर्ष पूर्व वैदिक काल में मिलती हैं। यह ज्ञान परंपरा समय के साथ निरंतर विकसित होती रही है और विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक परिवर्तनों के साथ इसका स्वरूप और भी व्यापक होता गया। भारतीय ज्ञान प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए इसे विभिन्न कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है, जिनमें प्रत्येक कालखंड ने इस प्रणाली को विशिष्ट दिशा और गहराई प्रदान की।

(i) वैदिक काल (Vedic Period)

भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रारंभ वैदिक काल से माना जाता है, जो लगभग 1500 ईसा पूर्व से प्रारंभ होता है। इस काल में वेदों की रचना हुई, जिन्हें विश्व का सबसे प्राचीन ज्ञान स्रोत माना जाता है। चार प्रमुख वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—में जीवन के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत वर्णन मिलता है।

ऋग्वेद में प्रकृति, देवताओं और ब्रह्मांड की उत्पत्ति से संबंधित सूक्त हैं, जबकि यजुर्वेद में यज्ञ और कर्मकांड की विधियाँ वर्णित हैं। सामवेद संगीत और स्वर विज्ञान से संबंधित है, और अथर्ववेद में चिकित्सा, सामाजिक जीवन और दैनिक समस्याओं के समाधान का उल्लेख मिलता है।

इस काल में ज्ञान का संचार मुख्यतः श्रुति परंपरा के माध्यम से होता था, जिसमें गुरु से शिष्य तक मौखिक रूप में ज्ञान का आदान-प्रदान होता था। यह प्रणाली अत्यंत सुदृढ़ और अनुशासित थी, जिससे ज्ञान की शुद्धता और निरंतरता बनी रहती थी।

(ii) उपनिषद काल (Upanishadic Period)

वैदिक काल के पश्चात उपनिषद काल का विकास हुआ, जिसे भारतीय दर्शन का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में वेदों के दार्शनिक पक्ष का विस्तार हुआ और ज्ञान को अधिक गहराई से समझने का प्रयास किया गया। उपनिषदों में आत्मा (आत्मन्) और परमात्मा (ब्रह्म) के संबंध, जीवन का उद्देश्य, मोक्ष और चेतना जैसे विषयों पर गहन विचार किया गया। "तत्त्वमसि" (तू वही है) और "अहं ब्रह्मास्मि" जैसे महावाक्य इस काल की दार्शनिक गहराई को दर्शाते हैं। इस काल में ज्ञान को केवल बाह्य जगत तक सीमित न रखकर, आंतरिक अनुभव और आत्मबोध के माध्यम से समझने पर बल दिया गया। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली में आध्यात्मिकता और आत्मचिंतन का समावेश हुआ।

(iii) बौद्ध एवं जैन काल (Buddhist and Jain Period)

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध और जैन धर्मों का उदय हुआ, जिसने भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक नई दिशा प्रदान की। इस काल में ज्ञान का केंद्र नैतिकता, करुणा, अहिंसा और व्यावहारिक जीवन बन गया।भगवान बुद्ध ने "मध्यम मार्ग" का सिद्धांत दिया, जिसमें जीवन में संतुलन बनाए रखने पर बल दिया गया। जैन धर्म के तीर्थंकरों ने अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य जैसे मूल्यों को महत्व दिया।

इस काल में शिक्षा प्रणाली अधिक लोकतांत्रिक और सुलभ हो गई, और नालंदा तथा तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। इन विश्वविद्यालयों में दर्शन, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान और साहित्य जैसे विषयों का अध्ययन किया जाता था।

(iv) शास्त्रीय काल (Classical Period)

इस काल में भारतीय ज्ञान प्रणाली ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की। यह काल विशेष रूप से गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और साहित्य के विकास के लिए जाना जाता है।

- गणित में आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने शून्य, दशमलव प्रणाली और बीजगणित में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- खगोल विज्ञान में ग्रहों की गति और समय गणना पर शोध हुआ।
- आयुर्वेद में चरक और सुश्रुत ने चिकित्सा विज्ञान को विकसित किया।

इस काल में ज्ञान का स्वरूप अधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक हो गया, जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैश्विक पहचान मिली।

(v) मध्यकालीन काल (Medieval Period)

मध्यकालीन काल में भारतीय ज्ञान प्रणाली ने विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभावों को आत्मसात किया। इस काल में भक्ति आंदोलन और सूफी परंपरा का उदय हुआ, जिसने ज्ञान को अधिक सरल, भावनात्मक और जनसामान्य के लिए सुलभ बनाया।इस समय साहित्य, संगीत और कला का भी विकास हुआ। तुलसीदास, कबीर और मीराबाई जैसे संतों ने ज्ञान को लोकभाषाओं में

प्रस्तुत किया, जिससे यह अधिक व्यापक रूप से फैल सका। हालाँकि, इस काल में कुछ क्षेत्रों में वैज्ञानिक प्रगति धीमी हो गई, फिर भी ज्ञान की परंपरा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई।

(vi) औपनिवेशिक काल (Colonial Period)

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक बड़ा झटका लगा। पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को प्राथमिकता दी गई और पारंपरिक ज्ञान को कम महत्व दिया गया। अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से आधुनिक विज्ञान और तकनीकी ज्ञान का प्रसार हुआ, लेकिन इसके साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा का ह्रास भी हुआ। गुरुकुल प्रणाली धीरे-धीरे समाप्त हो गई और उसकी जगह औपचारिक विद्यालय प्रणाली ने ले ली। फिर भी, इस काल में कई विद्वानों ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

(vii) आधुनिक काल (Modern Period)

स्वतंत्रता के बाद भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः महत्व दिया जाने लगा। आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान में पारंपरिक ज्ञान को शामिल करने के प्रयास किए गए। विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर जोर दिया गया है। इसके अंतर्गत:

- विश्वविद्यालयों में IKS पाठ्यक्रम शुरू किए गए
- पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ा जा रहा है
- शोध और नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है

आज भारतीय ज्ञान प्रणाली वैश्विक स्तर पर भी स्वीकार की जा रही है, विशेष रूप से योग, आयुर्वेद और ध्यान के क्षेत्र में।

1.2.1 ऐतिहासिक विकास का समग्र विश्लेषण

भारतीय ज्ञान प्रणाली का ऐतिहासिक विकास यह दर्शाता है कि यह एक स्थिर नहीं, बल्कि गतिशील और विकसित होती रहने वाली प्रणाली है। प्रत्येक कालखंड ने इसमें नए विचार, दृष्टिकोण और ज्ञान जोड़े हैं। यह प्रणाली समय के साथ बदलती रही, लेकिन इसके मूल सिद्धांत—समग्रता, संतुलन और नैतिकता—सदैव स्थिर रहे। यही कारण है कि यह आज भी प्रासंगिक है और आधुनिक समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध हो रही है।

निष्कर्ष (Section Conclusion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह स्पष्ट करती है कि यह एक गहन और व्यापक परंपरा है, जिसने हजारों वर्षों तक मानव समाज को दिशा प्रदान की है। यह केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक है।

1.4 भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख स्रोत (Primary Sources of Indian Knowledge System)

भारतीय ज्ञान प्रणाली की समृद्धि और व्यापकता का प्रमुख आधार उसके विविध और गहन स्रोत हैं। ये स्रोत केवल ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि ज्ञान, अनुभव, दर्शन और व्यवहारिक जीवन के मार्गदर्शक भी हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख स्रोतों में वेद, उपनिषद, शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण, महाकाव्य, और लोक परंपराएँ शामिल हैं। इन सभी स्रोतों ने मिलकर एक ऐसी ज्ञान परंपरा का निर्माण किया है, जो आज भी प्रासंगिक और उपयोगी है।

1.4.1 वेद (Vedas)

वेद भारतीय ज्ञान प्रणाली के सबसे प्राचीन और मूल स्रोत हैं। "वेद" शब्द संस्कृत धातु "विद्" से बना है, जिसका अर्थ है—जानना या ज्ञान प्राप्त करना। वेदों को श्रुति कहा जाता है, क्योंकि इन्हें गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से मौखिक रूप में संप्रेषित किया गया था।

चार वेदों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

(i) ऋग्वेद

यह सबसे प्राचीन वेद है, जिसमें 1028 सूक्त (मंत्र) हैं। इसमें प्रकृति, देवताओं और ब्रह्मांड की उत्पत्ति से संबंधित ज्ञान मिलता है। ऋग्वेद में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती है।

(ii) यजुर्वेद

इसमें यज्ञ और कर्मकांड की विधियाँ वर्णित हैं। यह वेद धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक व्यवस्था के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

(iii) सामवेद

यह संगीत और स्वर विज्ञान से संबंधित है। सामवेद को भारतीय संगीत का आधार माना जाता है।

(iv) अथर्ववेद

इसमें चिकित्सा, सामाजिक जीवन और दैनिक समस्याओं के समाधान का वर्णन मिलता है। इसे लोकजीवन का वेद भी कहा जाता है।

वेदों में केवल धार्मिक विषय ही नहीं, बल्कि गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और पर्यावरण से संबंधित ज्ञान भी निहित है। इस प्रकार वेद भारतीय ज्ञान प्रणाली की नींव हैं।

1.4.2 उपनिषद (Upanishads)

उपनिषद भारतीय दर्शन के प्रमुख स्रोत हैं। "उपनिषद" शब्द का अर्थ है—गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। ये ग्रंथ वेदों के अंतिम भाग माने जाते हैं और इन्हें वेदांत भी कहा जाता है।

उपनिषदों में मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई है:

- आत्मा (आत्मन्) और परमात्मा (ब्रह्म) का संबंध
- जीवन का उद्देश्य
- मोक्ष की प्राप्ति
- चेतना और ज्ञान

प्रमुख उपनिषदों में ईश, केन, कठ, मुण्डक और छांदोग्य उपनिषद शामिल हैं। इन ग्रंथों ने भारतीय दर्शन को गहराई और व्यापकता प्रदान की है।

1.4.3 शास्त्र (Shastras)

शास्त्र भारतीय ज्ञान प्रणाली के व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक स्रोत हैं। ये विभिन्न विषयों पर आधारित ग्रंथ हैं, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

प्रमुख शास्त्र:

- आयुर्वेद – चिकित्सा विज्ञान
- अर्थशास्त्र – राजनीति और अर्थव्यवस्था
- नाट्यशास्त्र – कला और नाटक
- वास्तुशास्त्र – भवन निर्माण और स्थापत्य

इन शास्त्रों में ज्ञान को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह व्यावहारिक जीवन में उपयोगी बनता है।

1.4.4 स्मृतियाँ (Smritis)

स्मृतियाँ वे ग्रंथ हैं जो समाज के नियमों और आचार संहिताओं को निर्धारित करते हैं। ये वेदों की व्याख्या और अनुप्रयोग को स्पष्ट करती हैं।

उदाहरण:

- मनुस्मृति
- याज्ञवल्क्य स्मृति

स्मृतियों में सामाजिक व्यवस्था, धर्म, न्याय और नैतिकता से संबंधित नियमों का वर्णन मिलता है।

1.4.5 पुराण (Puranas)

पुराण भारतीय ज्ञान प्रणाली के लोकप्रिय और कथात्मक स्रोत हैं। इनमें इतिहास, धर्म, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का वर्णन कहानी के रूप में किया गया है। प्रमुख पुराणों में विष्णु पुराण, शिव पुराण और भागवत पुराण शामिल हैं। ये ग्रंथ जनसामान्य के लिए ज्ञान को सरल और रोचक रूप में प्रस्तुत करते हैं।

1.4.6 महाकाव्य (Epics)

भारतीय ज्ञान प्रणाली के दो प्रमुख महाकाव्य—रामायण और महाभारत—नैतिकता, धर्म और जीवन मूल्यों के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

- रामायण – आदर्श जीवन और कर्तव्य का प्रतीक
- महाभारत – धर्म, न्याय और नैतिक द्वंद्व का चित्रण

महाभारत का एक महत्वपूर्ण भाग भगवद गीता है, जिसमें कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय प्रस्तुत किया गया है।

1.4.7 *लोक परंपराएँ* (Folk Traditions)

भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण स्रोत लोक परंपराएँ भी हैं। इनमें लोकगीत, लोककथाएँ, पारंपरिक चिकित्सा और कृषि पद्धतियाँ शामिल हैं। लोक ज्ञान अनुभव आधारित होता है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। यह ज्ञान स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप होता है और सतत विकास में सहायक होता है।

1.4.8 *गुरु-शिष्य परंपरा* (Guru-Shishya Tradition)

भारतीय ज्ञान प्रणाली में गुरु-शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है। इस परंपरा में ज्ञान का संचार केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और अनुभवात्मक होता है। गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत होते हैं। यह प्रणाली शिक्षा को अधिक प्रभावी और व्यक्तिगत बनाती है।

1.4.9 *स्रोतों का समग्र महत्व* (Integrated Significance)

भारतीय ज्ञान प्रणाली के ये सभी स्रोत मिलकर एक समग्र और संतुलित ज्ञान संरचना का निर्माण करते हैं। प्रत्येक स्रोत का अपना विशेष महत्व है:

- *वेद – मूल ज्ञान*
- *उपनिषद – दर्शन*
- *शास्त्र – व्यवहारिक अनुप्रयोग*
- *स्मृतियाँ – सामाजिक व्यवस्था*
- *पुराण – जनसामान्य में प्रसार*
- *महाकाव्य – नैतिक शिक्षा*
- *लोक परंपरा – अनुभव आधारित ज्ञान*

इन सभी स्रोतों का समन्वय भारतीय ज्ञान प्रणाली को अद्वितीय बनाता है।

1.4.10 *आधुनिक संदर्भ में महत्व* (Modern Relevance of Sources)

आज के समय में इन स्रोतों का पुनः अध्ययन और विश्लेषण किया जा रहा है। विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में इन ग्रंथों पर शोध कार्य हो रहे हैं। इन स्रोतों से प्राप्त ज्ञान को आधुनिक विज्ञान और तकनीक के साथ जोड़कर नए आयाम विकसित किए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए:

- *आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा का समन्वय*
- *योग और मानसिक स्वास्थ्य*
- *वास्तुशास्त्र और पर्यावरणीय डिजाइन*

1.5 *भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख क्षेत्र* (Core Domains of Indian Knowledge System)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी बहुआयामी और समग्र प्रकृति है। यह केवल किसी एक विषय तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों—विज्ञान, चिकित्सा, गणित, दर्शन, कला और आध्यात्मिकता—को एकीकृत रूप में प्रस्तुत करती है। इन क्षेत्रों का विकास हजारों वर्षों में हुआ है और प्रत्येक क्षेत्र ने मानव जीवन को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस खंड में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख क्षेत्रों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

1.5.1 *आयुर्वेद* (Ayurveda)

आयुर्वेद भारतीय चिकित्सा विज्ञान की प्राचीनतम प्रणाली है, जिसका अर्थ है—"जीवन का ज्ञान" (आयु + वेद)। यह केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य के संरक्षण और संतुलित जीवन शैली पर आधारित है।

प्रमुख सिद्धांत:

- *त्रिदोष सिद्धांत – वात, पित्त और कफ*
- *सप्त धातु – शरीर की संरचना*
- *प्रकृति आधारित चिकित्सा*

आयुर्वेद में रोगों के कारण, निदान और उपचार का विस्तृत वर्णन मिलता है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता इसके प्रमुख ग्रंथ हैं।

आधुनिक प्रासंगिकता:

आज आयुर्वेद को विश्वभर में वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली के रूप में अपनाया जा रहा है। WHO भी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा दे रहा है।

1.5.2 योग (Yoga)

योग भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसका उद्देश्य शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करना है। योग का उल्लेख पतंजलि के योगसूत्र में मिलता है।

योग के प्रमुख अंग (अष्टांग योग):

- यम
- नियम
- आसन
- प्राणायाम
- प्रत्याहार
- धारणा
- ध्यान
- समाधि

लाभ:

- मानसिक तनाव में कमी
- शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार
- एकाग्रता और आत्मनियंत्रण

वैश्विक प्रभाव:

आज योग को विश्वभर में अपनाया जा रहा है और 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है।

1.5.3 भारतीय गणित (Indian Mathematics)

भारतीय गणित ने विश्व को कई महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं, जैसे:

- शून्य (Zero) की खोज
- दशमलव प्रणाली (Decimal System)
- बीजगणित और त्रिकोणमिति का विकास

प्रमुख गणितज्ञ:

- आर्यभट्ट
- ब्रह्मगुप्त
- भास्कराचार्य

इन गणितज्ञों के कार्यों ने आधुनिक गणित की नींव रखी।

1.5.4 खगोल विज्ञान (Astronomy)

भारतीय खगोल विज्ञान का विकास गणित के साथ-साथ हुआ। इसमें ग्रहों, नक्षत्रों और समय की गणना का अध्ययन किया गया।

प्रमुख योगदान:

- सूर्य और चंद्र ग्रहण की गणना
- पृथ्वी की परिधि का अनुमान
- पंचांग प्रणाली

आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे विद्वानों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1.5.5 दर्शन (Philosophy)

भारतीय दर्शन मानव जीवन के गहन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है। इसमें छह प्रमुख दर्शनों का उल्लेख मिलता है:

- सांख्य
- योग
- न्याय
- वैशेषिक
- मीमांसा
- वेदांत

इन दर्शनों में जीवन, चेतना, आत्मा और ब्रह्मांड के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

विशेषता:

भारतीय दर्शन केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन से जुड़ा हुआ है।

1.5.6 कला और संस्कृति (Art and Culture)

भारतीय ज्ञान प्रणाली में कला और संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें शामिल हैं:

- संगीत
- नृत्य
- चित्रकला
- वास्तुकला

उदाहरण:

- भरतनाट्यम और कथक नृत्य
- मंदिर वास्तुकला
- शास्त्रीय संगीत

कला के माध्यम से ज्ञान और भावनाओं का संप्रेषण किया जाता है।

1.5.7 पर्यावरण और सतत विकास (Environment and Sustainability)

भारतीय ज्ञान प्रणाली में प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया है।

प्रमुख अवधारणाएँ:

- पंचमहाभूत सिद्धांत
- प्रकृति संरक्षण
- सतत जीवन शैली

आधुनिक महत्व:

आज जब पर्यावरणीय संकट बढ़ रहे हैं, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली का यह दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

1.5.8 शिक्षा प्रणाली (Education System)

भारतीय ज्ञान प्रणाली की शिक्षा प्रणाली गुरुकुल परंपरा पर आधारित थी।

विशेषताएँ:

- व्यक्तिगत शिक्षा
- नैतिक और आध्यात्मिक विकास
- अनुभव आधारित शिक्षण

आज की शिक्षा प्रणाली में भी इन सिद्धांतों को अपनाने का प्रयास किया जा रहा है।

1.5.9 विज्ञान और प्रौद्योगिकी (Science and Technology)

प्राचीन भारत में विज्ञान और तकनीक का भी विकास हुआ था।

उदाहरण:

- धातु विज्ञान (Iron Pillar of Delhi)
- जल प्रबंधन प्रणाली
- चिकित्सा तकनीक

ये सभी दर्शाते हैं कि भारतीय ज्ञान प्रणाली वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित थी।

1.5.10 *समग्र विश्लेषण* (Integrated Analysis)

भारतीय ज्ञान प्रणाली के ये सभी क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए:

- *योग और आयुर्वेद स्वास्थ्य से जुड़े हैं*
- *गणित और खगोल विज्ञान विज्ञान से जुड़े हैं*
- *दर्शन और शिक्षा जीवन मूल्यों से जुड़े हैं*

इस प्रकार यह प्रणाली एक एकीकृत और संतुलित ज्ञान संरचना प्रस्तुत करती है।

1.6 *वास्तविक जीवन अनुप्रयोग* (Real-world Applications)

केस स्टडी 1: *योग का वैश्विक प्रभाव*

आज योग को विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) *इसका उदाहरण है।*

केस स्टडी 2: *आयुर्वेद और* WHO

आयुर्वेद को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) *द्वारा मान्यता दी जा रही है।*

1.7 *आलोचनात्मक विश्लेषण* (Critical Analysis)

लाभ:

- *समग्र विकास*
- *पर्यावरण के अनुकूल*
- *मानसिक स्वास्थ्य में सुधार*

सीमाएँ:

- *वैज्ञानिक प्रमाणों की कमी (कुछ क्षेत्रों में)*
- *आधुनिक शिक्षा में सीमित समावेशन*

1.8 *समकालीन प्रासंगिकता* (Contemporary Relevance)

NEP 2020 *के तहत भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा में शामिल किया जा रहा है। यह प्रणाली:*

- *सतत विकास को बढ़ावा देती है*
- *मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करती है*
- *सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है*

1.9 *निष्कर्ष* (Conclusion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) *एक अत्यंत समृद्ध, बहुआयामी और समग्र ज्ञान परंपरा है, जिसने हजारों वर्षों तक मानव समाज को दिशा प्रदान की है। इस अध्याय के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल अतीत की ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी है।*

भारतीय ज्ञान प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता इसका समग्र दृष्टिकोण (Holistic Approach) *है, जिसमें मानव जीवन के सभी पहलुओं—शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक—का संतुलित विकास सुनिश्चित किया जाता है। यह प्रणाली केवल ज्ञान के संचय पर बल नहीं देती, बल्कि उस ज्ञान के व्यावहारिक उपयोग और नैतिकता को भी महत्व देती है। इस दृष्टिकोण से यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए एक महत्वपूर्ण पूरक सिद्ध हो सकती है।*

इस अध्याय में भारतीय ज्ञान प्रणाली के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया, जिसमें इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख स्रोत, और विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों का विस्तृत विश्लेषण शामिल है। यह देखा गया कि वेद, उपनिषद, शास्त्र, महाकाव्य और लोक परंपराएँ इस ज्ञान प्रणाली की नींव हैं, जो इसे गहराई और व्यापकता प्रदान करती हैं। साथ ही, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोल विज्ञान और दर्शन जैसे क्षेत्रों ने मानव जीवन को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ मानवता अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है—जैसे पर्यावरणीय संकट, मानसिक तनाव, सामाजिक असंतुलन और नैतिक मूल्यों का ह्रास—वहाँ भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समग्र और संतुलित समाधान प्रस्तुत करती है। उदाहरण के लिए, योग और ध्यान मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में सहायक हैं, जबकि आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से स्वास्थ्य को बनाए रखने में योगदान देता है। इसी प्रकार, पंचमहाभूत सिद्धांत और प्रकृति के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण पर्यावरण

संरक्षण के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की एक और महत्वपूर्ण विशेषता इसकी अनुकूलनशीलता (Adaptability) *है। यह प्रणाली समय के साथ बदलती रही है और विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक और वैज्ञानिक परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को विकसित करती रही है। यही कारण है कि यह आज भी प्रासंगिक बनी हुई है और आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के साथ समन्वय स्थापित करने में सक्षम है।*

हाल के वर्षों में भारत सरकार द्वारा लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) *2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर विशेष जोर दिया है। इसके अंतर्गत पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों को एक संतुलित और समग्र शिक्षा प्राप्त हो सके। यह पहल न केवल भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में सहायक है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान को भी मजबूत करती है।*

हालाँकि, भारतीय ज्ञान प्रणाली के समक्ष कुछ चुनौतियाँ भी हैं। इनमें प्रमुख हैं:

- *पारंपरिक ज्ञान का सीमित दस्तावेजीकरण*
- *आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसका सीमित समावेश*
- *वैज्ञानिक प्रमाणों की आवश्यकता (कुछ क्षेत्रों में)*

इन चुनौतियों को दूर करने के लिए आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली पर वैज्ञानिक शोध, प्रलेखन और आधुनिक संदर्भ में पुनर्व्याख्या की जाए। इसके साथ ही, इसे शिक्षा और अनुसंधान में अधिक व्यापक रूप से शामिल किया जाए।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली एक जीवंत, गतिशील और सार्वभौमिक ज्ञान परंपरा है, जो मानव जीवन को संतुलित, नैतिक और सार्थक बनाने की दिशा प्रदान करती है। यह प्रणाली न केवल भारत के लिए, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

इस अध्याय के माध्यम से पाठकों को भारतीय ज्ञान प्रणाली की मूलभूत समझ प्रदान करने का प्रयास किया गया है, ताकि वे इसके महत्व, उपयोगिता और वैश्विक प्रासंगिकता को गहराई से समझ सकें। भविष्य में, इस ज्ञान प्रणाली के अध्ययन और अनुसंधान के माध्यम से नई संभावनाओं और नवाचारों के द्वार खुल सकते हैं, जो मानवता के समग्र विकास में सहायक होंगे।

संदर्भ (References)

1. Datta, R. (2022). Indian knowledge system and its relevance. *Journal of Indian Education*.
2. Kumar, S. (2021). Integration of traditional knowledge in modern education. *International Journal of Educational Research*.
3. Sharma, P. (2020). Indian philosophy and knowledge traditions. *Philosophy East and West*, 70(3), 567–589.
4. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
5. WHO. (2023). Traditional medicine strategy. World Health Organization.
6. Government of India. (2020). *National education policy 2020*. Ministry of Education. https://www.education.gov.in
7. Kapoor, S. (2021). *Indian knowledge system: An overview*. D.K. Printworld.
8. Radhakrishnan, S. (2008). *Indian philosophy* (Vol. 1 & 2). Oxford University Press.
9. Sharma, C. D. (2013). *A critical survey of Indian philosophy*. Motilal Banarsidass.
10. Datta, R. (2022). Indian knowledge system and its relevance in modern education. *Journal of Indian Education*, 48(2), 45–60.
11. Kumar, S., & Singh, R. (2021). Integration of traditional knowledge systems into modern education. *International Journal of Educational Research*, 110, 101–110.
12. Sharma, P. (2020). Indian philosophy and knowledge traditions: A contemporary perspective. *Philosophy East and West*, 70(3), 567–589.
13. World Health Organization. (2023). *WHO traditional medicine strategy 2014–2023*.

https://www.who.int